Jana Publication & Research

The truth about the world of education in another Dronacharya play

VRC25

Document Details

Submission ID

trn:oid:::2945:315706571

Submission Date

Oct 1, 2025, 11:28 AM GMT+5:30

Download Date

Oct 1, 2025, 11:35 AM GMT+5:30

File Name

IJAR-54117.pdf

File Size

653.8 KB

7 Pages

3,660 Words

7,191 Characters

1% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
1% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

- 0% Internet sources
- 0% Publications
- 1% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1 Student papers	University of Mumbai on 2024-11-13	<1%
2 Student papers	Central University of Gujarat on 2019-10-31	<1%
3 Student papers	Central University of Gujarat on 2019-05-14	<1%
4 Internet	www.5xj.com	<1%
5 Student papers	University of Mumbai on 2022-12-03	<1%

एक और द्रोणाचार्य नाटक में शिक्षा जगत का सच

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे

सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष

श्री मधुकरराव बापुराव पाटिल खतगांवकर महाविद्यालय

शंकरनगर त.- बिलोली, जि- नांदेड

भ्रमणध्वनि - 9881641369

इमेल- **bhumare1984@gmail.com**

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

शोधसार - नाटककार ने एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों और विडंबनाओ को लेकर लिखा है। प्रस्तुत नाटक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में राजनीति , शिक्षा व्यवस्था का व्यवसायीकारण ,शिक्षा व्यवस्था की समस्या , सत्ता की दास्तान आदि का रहस्योद्घाटन किया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि , कैसे सत्ता और व्यवस्था के दबाव में एक आदर्शवादी शिक्षक अपनी सिद्धांतों के आगे समझौता करने को मजबूर हो जाते है। जिससे शिक्षक स्वयं की नैतिक मूल्यों और आदर्शों से संघर्ष करते है ।नाटक शिक्षा जगत की समस्याओं को छूते हुए दर्शकों को विचार करने पर मजबूर करता है कि ,किस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में राजनीति और स्वार्थ ने स्थान पा लिया है। जैसे बुद्धिजीवी वर्ग भी अपनी पहचान खो देते है अर्थात यह नाटक शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार करते हुए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और व्यवसायीकरण को उजागर करता है । साथ ही नैतिकता का पतन , और द्रोणाचार्य का आधुनिक संदर्भ हमारे सामने रखता है । आज व्यवस्था के द्वारा किस प्रकार आधुनिक द्रोणाचार्य की दुर्दशा हुई है ,उसकी और भी संकेत किया है ।

बीज शब्द - शिक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार, अव्यवस्था ,व्यवसायीकरण,पौराणिक पात्र,शिक्षा जगत का यथार्थ, एक और द्रोणाचार्य,आदर्श शिक्षक,नकल,शिक्षा व्यवस्था का सच ।

प्रस्तावना - एक और द्रोणाचार्य इस नाटक के रचनाकार शंकर शेष है। इस नाटक में समकालीन शिक्षा जगत का यथार्थ और पौराणिक पात्रों के माध्यम से वर्तमान युगीन समस्याओं का वर्णन किया है। इस नाटक में दो भाग है जिसके प्रथम भाग को पूर्वार्ध और द्वितीय भाग

उत्तरार्ध के रूप में है। इस नाटक में अरविंद, यदू ,प्रिंसिपल ,चंदू, प्रेसिडेंट, विमलेंदु, अश्वत्थामा द्रोणाचार्य, युधिष्ठिर ,भीष्म, एकलव्य और अर्जुन आदि पुरुष पात्र है तो लीला , कृपी, अनुराधा आदि स्त्री पात्र है। इस नाटक के केंद्रीय पात्र अरविंद, पत्नी लीला और विमलेंदु है।

आधुनिक शिक्षा जगत का सच और विभिन्न आयाम -

नाटक का प्रारंभ अरविंद और लीला के संवाद से होता है। आम आदमी को रोजमर्रा के जीवन की घुटन , महंगाई की मार झेलनी पड़ती है। इसी प्रकार के संकटों का सामना लीला और अरविंद भी करते हैं। अरविंद पेशे से अध्यापक है ,जो स्वंय के आचरण से आदर्शोन्मुख तत्वों की स्थापना करता है। एक शिक्षक होने के बावजूद उसे स्वंय के घर पर ही अपने सिद्धांतों को तिलांजलि देने मजबूर होना पड़ता है। शिक्षक अपने काम को तभी सुचारू रूप से कर पायेगा जब वह घर, परिवार की आवश्यकताओं से चिंतित ना हो साथ ही अध्यापकों के कामकाज में किसी अन्य व्यवस्था का हस्तक्षेप न हो। अरविंद जैसे शिक्षक अपने कामकाज को ईमानदारी से निभाना चाहते हैं परंतु घर में राशन कार्ड बनाना है , मां का ऑपरेशन भी करना है ,इतनी सारी जिम्मेदारियां को निभाते हुए शैक्षणिक कार्यों को भी निभाना पड़ता है ।

अरविंद की अपने काम पर निष्ठा है । वे किसी भी काम को ईमानदारी से निभाते हैं परंतु परीक्षा में चिट्ठियां नहीं कर देने पर प्रेसिडेंट और गुंडो के निशाने पर आते है। आज की शिक्षा व्यवस्था में चिट्ठी की सहायता से शिक्षा प्राप्त करने का शॉर्टकट माध्यम बन गया है। चिट्ठी लेकर पास होने की प्रवृत्ति अत्याधिक बढ़ गई हैं। साथ ही बिना पेपर लिखे अंक को बढ़ाकर लेने की कुप्रवृत्ति बढ गई है। ऐसे में अरविंद की पत्नी नंबर बढाकर देने की वकालत भी करती है। आज प्रमोशन के चक्कर में चाटुकारिता इतनी बढ़ गई है कि , रिश्वत के फल घरों तक पहुंच गए हैं । इसी कारण लीला को महंगाई नही दिख पाती । साथ ही घर में जरूरी चीजों के लिए लीला पति को ताने भी मारती रहती है । अपने पति को गलत रास्ता अपनाने के लिए उकसाती है जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने हेतू पृवृत्त करती हैं। लीला भ्रष्टाचारी व्यवस्था का साथ देने हेतु कई सारे तर्क प्रस्तुत करती है । जैसे , " तुम्हें यह नौकरी किसके कारण मिली है ? यह मकान , अस्पताल से सुविधा कौन दिलवा रहा है। दो नंबर बढाकर देते तो कौन सा

आसमान फट जाता।"1 अर्थात लीला अरविंद को बोलने नहीं देती । कई सारे ताने देती रहती है । भ्रष्टाचारी व्यवस्था निजी लाभों के लिए शिक्षक को साथ देने का आग्रह करती है। जैसे ही यदु अरविंद के घर पहुंचता है वैसे ही शहर के कोने-कोने में जो खबर फैल गई है। अरविंद ने प्रेसिडेंट के लड़के को ही नकल करते हुए धर दबोचा है ।अरविंद एक सच्चा शिक्षक है , वे छात्रों द्वारा की जा रही बेईमानी देख नहीं पाता अर्थात नकल करने वाले प्रेसिडेंट के राजकुमार नामक बेटे को धर दबोच लेते हैं साथ ही यही समाचार यदु द्वारा लीला सुनती है तो कहती है कि , "तुम्हें क्या गरज पड़ी थी कर रहा था नकल करने देते ? क्या बिगड़ जाता?"2 इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में ऐसे नकल करने हेतू पारिवारिक समर्थन मिलते रहेंगे तो शिक्षा व्यवस्था पुरी तरह से भ्रष्ट होने में देर न लगे। यदु द्वारा अरविंद को प्रिंसिपल बनने का लालच भी दिखाते हैं। यदु कहता है कि , " भ्रष्ट व्यवस्था का साथ दिया होता तो प्रमोशन होना पक्का था । अरविंद ने बेवजह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी है ।अपने हाथों अपना नुकसान उठा रहा है "3। अरविंद आदर्शवादी शिक्षक है । वे अपने उसूलों पर चलने के आग्रही है। अध्यापक के लिए तो अपने उसूलों पर चलना जीवन- मरण का प्रश्न होता है ।यदु बार-बार अरविंद को समझाते हैं कि , मां कैंसर से जूझ रही है । विधवा बहन पैसे का इंतजार कर रही है। लड़के को मेडिकल कॉलेज में भेजना है। इसके लिए तो पैसा जुटाना पड़ेगा। यदु तो बार-बार अरविंद को उनकी आर्थिक अभावों का एहसास कराता रहता है। यदु प्रिंसिपल का ही आदमी है। परंतु अरविंद अपने निर्णय पर डटकर रहते हैं। साथ ही नकल किए लड़के की रिपोर्ट यूनिवर्सिटी को भेज देते हैं।

अरविंद को यदु याद दिलाता है कि , शिक्षा में किस प्रकार गुंडाराज चलता है। प्रेसिडेंट को नाराज करने पर नौकरी करना मुश्किल हो जाता है । उनके ही एक साथी विमलेंदू ने बड़े आदमी के लड़के को नकल करते समय पकड़ा था तो गुंडो ने चौराहे पर उसकी हत्या की थी। जैसे,यदु कहते हैं कि, "साथ किसने दिया सब बुझदिलों की तरह घर बैठे रहे। गुंडो ने बीच चौराहे पर उसकी जान ले ली , क्या हुआ।"4 इस व्यवस्था में जो सच का साथ देते हैं , झूठ का विरोध करते हैं तो उसकी हत्या करके रास्ते से हटाया जाता है। यह आज की शिक्षा व्यवस्था में आम बन गया है। विमलेंदु जैसे सच्चे शिक्षक को डराया जाता है । नकल की रिपोर्ट वापस लेने हेतु उस पर दबाव डाला जाता है। यदु अरविंद को कहते हैं कि , एक सच्चे अध्यापक का साथ कोई नहीं देते। अरविंद की पत्नी लीला उसे समझाती है कि , " कही नौकरी से हाथ धोना ना पड़े ,कैसे तो घर गृहस्थी चल रही है। खाने के लाले पड़ जाएंगे , बैंक के किस्त कैसे चुका पाओगे। "5 अर्थात एक प्रामाणिक शिक्षक को भ्रष्ट व्यवस्था के साथ मिलाने के लिए प्रिंसिपल अनेक प्रकार की कोशिशे करता है । प्रेसिडेंट भी अपने बेटे की नकल करने का समर्थन

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

करते हैं। तथा लीला को यह समझाते हैं कि , पति अर्थात अरविंद को समझाकर नकल का मामला वापस लेने का दबाव बनाते है। आज शिक्षा के क्षेत्र में गुंडागर्दी बढ़ रही है ।नकल या कोई भी छोटी-मोटी घटना हो तो फसाद होने का डर रहता है । इस नाटक में भी नकल पकड़ी जाने पर उसके समर्थन में प्रिंसिपल से लेकर व्यवस्था भी सहभागी होती हैं । साथ ही प्रिंसिपल को नकल करने वालों की तरफ से कारवाई न करने की धमकी दी जाती है । नकल करने पर उसका विरोध करना , नकल को रोकना सबका दायित्व होता है । जबकि प्रिंसिपल के साथी ही शिक्षा के सभी घटकों का दायित्व है कि , शिक्षा की व्यवस्था को गुणवत्ता से परिपूर्ण बनाए। प्रिन्सिपल को जो नौकरी मिली है उसे वे उपकार मानते हैं। साथ ही प्रेसिडेंट के द्वारा नौकरी दिए जाने का हास्यपद समर्थन करते हैं। ऐसे प्रिंसिपल से क्या शिक्षा में सुधार की अपेक्षा की जाती है । यह स्थिति आज की शिक्षा की दुर्दशा को दर्शाती है। जैसे , प्रिन्सिपल साहब कहते है कि, "प्रेसिडेंट साहब आखिर मालिक है। अन्नदाता है। उनका कॉलेज , उनकी मर्जी। इसलिए तो कहता हूं नौकरी है तो कान बंद कर लो , आंखें मूंद लो, मुंह खुला रखो बोलने के लिए नहीं रोटी खाने के लिए। "6 इस प्रकार वर्तमान शिक्षा संस्थानों में अध्यापकों के साथ प्रेसीडेंट भी और प्रिंसिपल अपने सहपाठियों के साथ गुलामों की तरह व्यवहार करते हैं। अध्यापकों की स्वतंत्रता पर कई सारी पाबंदियां लगाते हैं। अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए शिक्षण संस्थाओं का इस्तेमाल भी करते हैं । कॉलेज के प्रेसिडेंट जब चाहे तब कॉलेज बंद करवा सकते हैं । इतना ही नहीं संस्था, प्रिंसिपल की मर्जी के खिलाफ कोई बोलता है तो नौकरी से निष्कासित भी करते हैं। शिक्षा संस्थानों में से सेवा भाव समाप्त हो चुका है। इस दृष्टि से शिक्षा जगत के भ्रष्टाचार की पोल नाटक के पात्रों से हुई है। ऐसे शिक्षा संस्थानों में प्रमोशन हो या किसी पद पर उन्नति पाना हो तो प्रेसिडेंट की चापलूसी करनी पड़ती है। साथ ही रिश्वत भी देनी पड़ती है। समय-समय पर उन्हें सरकारी विभागों की योजनाओं का लाभ देने में सहायतार्थ काम करना पड़ता है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था का सच नाटक में अभिव्यक्त हुआ है।

आज शिक्षा क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र हर जहां पर अराजक और मनमानी जैसी प्रवृत्ति बढ़ रही है। समाज सेवा करने हेतु सरकार की सहायता से कई योजनाएं चलाई जाती है। इस योजनाओं में सरकार का ही पैसा होता है । परंतु इस योजनाओं को चलाने के लिए कई संस्थाओं का योगदान भी होता है। चाहे शैक्षणिक संस्था हो या कोई निजी संस्था। हर एक संस्था का उद्देश्य संस्कृति , समाज उत्थान के लिए योगदान देने की जिम्मेदारी होती है । परंतु वर्तमान शिक्षा संस्थानों में शिक्षा व्यवस्था कठपुतली की तरह काम करती है। जैसे नाटक में एक संवाद आया है कि , " वह प्रोफेसर को अपने बाप का नौकर समझता है और कॉलेज को अपनी

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

जायदाद।”7 संस्था के रिश्तेदारों को परीक्षा में नकल करने हेतु अध्यापकों को सहायता करने के लिए कहा जाता है। इतना ही नहीं परीक्षा में अंक बढ़ाने का दायित्व अध्यापकों को निभाना पड़ता है। साथ ही संस्था के किसी भी सदस्यों के बेटे या लड़के जब स्कूल में पढ़ाई करते हैं तब उनकी सेवा में हाजिर होना पड़ता है ।क्योंकि निजी शिक्षण संस्थानों के अध्यापकों की पदोन्नति प्रेसीडेंट और प्रिन्सिपल के हाथों होती हैं। परिणामस्वरूप अध्यापकों को अन्य कार्यों में जैसे चुनाव के दौरान काम पर लगाया जाता है। जैसे संस्था का कोई व्यक्ति चुनाव लड़ता है तो उनके लिए वोट जुटाने पड़ते हैं। साथ ही उनके प्रचार-प्रसार का कार्य भी करना पड़ता है। परिणामस्वरुप शैक्षणिक गुणवत्ता दुष्प्रभावित हो जाती है। इतना ही नहीं शिक्षण संस्था के अनुकूल कार्य न करने पर अध्यापकों को धमकाया भी जाता है । इस नाटक में भी प्रेसिडेंट के लड़के को बचाने के लिए काम न करने पर प्रिंसिपल तथा अन्य अध्यापकों को धमकाया जाता है। जैसे, “कल तक अपने रिपोर्ट नहीं बदली तो उसके परिणाम भयंकर होंगे । मैं कॉलेज को बंद कर दूंगा । ” 8 यह कॉलेज के प्रेसिडेंट कॉलेज को अपना मालिकाना हक समझते हैं । आज के शिक्षा संस्थानों की हकीकत इससे भी कई अधिक है। अरविंद जिस कॉलेज में अध्यापक है वहाँ के प्रेसिडेंट के बेटे की शिकायत वापस न लेने पर अरविंद को धमकी देते हैं । कॉलेज बंद करने और उसे ताला लगाने की । इस प्रकार की धमकी अध्यापकों को देकर उन्हें डराते हैं। जिन्हें शिक्षक और छात्रों से कोई लेना देना नहीं है। जब तक उनका स्वार्थ पूरा होते रहता है तब तक वे शिक्षा और अध्यापकों को अपना मान सम्मान देते हैं। जिस शिक्षा कॉलेज में समता की बात की जाती है। संस्कार होते हैं वहां पर दिन-ब-दिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं। परंतु वर्तमान में शिक्षा संस्थानों में भेदभाव की नई परंपरा शुरू हुई है जहां पर गरीब - अमीर, जाति और धर्म भेद की प्रथा शुरू हो चुकी है । जैसे की , नाटक में प्रेसिडेंट के बेटे के साथ जो उधर भाव दिखाया है वह किसी पिछड़ी जाति के या गरीब के प्रति दिखाया होता तो परिस्थितियों में सुधार हो जाता । परंतु चंदू जैसे होनहार छात्र की नकल पकड़ने पर उसे निष्कासित किया जाता है । शिक्षा व्यवस्था में माफिया , गुंडे लोगों के प्रवेश से शिक्षा व्यवस्था का स्तर दिन-ब-दिन चिंतनीय बनता जा रहा है। इस नाटक में अरविंद काम करने वाले प्रामाणिक अध्यापक है। उसे भी पत्नी तथा शिक्षा जगत के लोग भी कार्य करने नहीं देते हैं। बल्कि अरविंद पर यह कहकर दबाव डाला जाता है कि , जिससे अरविंद और अध्यापकों को प्रेसिडेंट का पक्ष लेना पड़ता है।जैसे , “इसमें डरने की क्या बात है। अगर यह लोग विमलेंदु की हत्या कर सकते हैं तो तुम्हारी क्यों नहीं ? हर बात तुम्हारे खिलाफ पड़ रही है ।जाओ रिपोर्ट वापस ले लो ”9 । साथ ही उनकी हत्या की भी धमकियां दी जाती रही है। इस प्रकार अरविंद ने जो प्रेसिडेंट के बच्चे की नकल की रिपोर्ट की है तब से उस पर कई प्रकार के दबाव डाले जाते है।

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

आज की शिक्षा व्यवस्था का सच यह है कि , ईमानदारी से किसी को भी काम करने नहीं देते। इस व्यवस्था के विरोध में जो भी आवाज उठाता है उसका शोषण किया जाता है।

निष्कर्ष - एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में पौराणिक और आधुनिक पात्रों का समन्वित रूप अभिव्यक्त हुआ है। इस नाटक में कथा वस्तु पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के रूप में दो भागों में विभाजित है। एक भाग में मुख्य रूप से प्रोफेसर अरविंद के इर्द-गिर्द यह कहानी घूमती है। अरविंद जो एक ऐसे शिक्षक है। अपने शैक्षणिक आदर्श को बनाए रखना चाहते हैं। लेकिन कॉलेज में भ्रष्टाचार और सत्ता के दबाव के कारण उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। साथ ही नाटक के उत्तरार्ध में पौराणिक कथा द्रोणाचार्य के माध्यम से वर्तमान में अरविंद के समानांतर चलती कथा आगे बढ़ती है। इस नाटक में मुख्य रूप से आधुनिक द्रोणाचार्य के रूप में अरविंद है। उसे सत्ता के दबाव के कारण कई बार समझौता करना पड़ता है। द्रोणाचार्य की जो विरासत आदर्श के रूप में मिली हुई थी लेकिन यह नाटक दिखाता है कि , कैसे सत्ता और व्यवस्था के कारण शिक्षक के आदर्श भी उध्वस्त होते जा रहे हैं। यह नाटक शिक्षा में फैली अराजक व्यवस्था पर प्रहार करता है साथ ही शिक्षा जगत में व्यवसायीकरण, राजनीतिक हस्तक्षेप और भ्रष्टाचार को सच्चाई के साथ प्रस्तुत करता है। अरविंद जैसे आदर्शवादी शिक्षकों का संघर्ष और व्यवस्था के सामने उनकी हार को यह नाटक व्यक्त करता है। यह नाटक वर्तमान शिक्षा की व्यवस्था पर साथ ही सामाजिक व्यवस्था पर जो करारा चोट करता है। उन पर सोचने के बाध्य बनाता है।

संदर्भ सूची -

1. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 10
2. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 16
3. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 22
4. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 27

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

5. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 31
6. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 40
7. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 48
8. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 50
9. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 55

UNDER PEER REVIEW IN IJAR